2018 - 19

"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 05, Issue: 04, Jul. – Aug. 2018 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) - 4.935

महिला कथाकारों के साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव

डॉ रेखा वसंतराव मुले
सहायक प्राध्यापक
वसन्तदादा पाटिल कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय
पटोदा जिला बीड, महाराष्ट्र.

भारत एक सुसंस्कृत राष्ट्र है इतिहास गवाह है। इतिहास गवाह है की प्रेरक शक्ति के रुप में नारी सदैव नैपथ्य में रही है। बीसवी शताब्दी के उतरार्द में न केवल भारत वरन्अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नारी की स्थिति में क्रांन्तिकारी परिवर्तन आया है। तथा कथित आज स्त्री विश्वरंगमंच अवतीर्ण हूई है। अन्तर्राष्ट्रीय महिला विश्व रंग मंच पर अवतीर्ण हुई है। अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष इसक प्रमाण माना जाता है। बीसवी शताब्दी का नारी को दिया गया यह अधिकार सर्वाधिक अमुल्य एव अविस्मरणी है।

महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने तथा उन्हे शोषण से बचाने के कानून बनाने का सिलसिला आजादी के बाद से ही जारी है। स्त्रियों के हितों के लिए फौजदारी कानून अधिक अनुकूल बनाएँ गये। कानून को महिलाओं की समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील बनाते का प्रयास किए जाए।आज महिलाओं के हितों के प्रति समाज के अन्य सभी अंगो की तुलना न्याय पालिका सबसे अधिक संवेदनशिल है। कानून और अदालती फैसलोंने महिलाओमें आत्मविश्वास एव आत्मसम्मान का भाव जगाने में सराहनीय भूमिका निभाई है।

आज शिक्षित महिलाए की गरीबी बीमारी प्रदूषण तथा बढती जैसी समस्याओं से लड भी सकती है। राजनीती शिक्षा, चिकित्सा कला साहित्य व्यापार प्रशासन जैसी सभी क्षेत्रों में महिलाए पुरुषो के समान और कही कही तो उनसे भी अधिक सफलता के साथ काम कर रही है। चेतनागत विकास मे सामाजिक, संस्कृतिक, राज्यनैतिक स्तर पर उसे उचित रुप में स्त्रिया प्रमुख भागिदारी में बदलते संदर्भ में स्त्री विमर्श का वैश्विक आयाम विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं का अस्तित्व एवं आत्मिक सम्मान महिलाओने समेहने की चेष्टा की है।

आज महिला लेखिका ओंने हिन्दी साहितय में चित्रित महिला लेखन के जीवन के विविध पहलुओं को उजागर किया है। हिन्दी साहित्य में स्त्रीयों के सामाजिक दायित्व का निर्वाह नये समाजिक मुल्यों की प्रतिष्ठा रुठियों का बहिष्कार विवाह विषयक बदलते दृष्टिकोन प्रौढ- अविवाहित स्त्रियों की स्थिति तथा स्त्री विषयक स्थितिका चित्रण महिला लेखीकाये सक्षम रही है।

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष में हमारे दिन की शुरुआत वैश्वीकरण से प्रभावित चीजों से होती है। और नींद मच्छर भगाने वाले विभिन्न कंपनियों के साधनोंसे वैश्वीकरण केवल भारत तक सीमित है ऐसी बात नही

108

इसने पूरे विश्व को राजनितीक, सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक, धार्मिक साहित्यीक सभी क्षेत्रों में प्रभावित किया है।

शैला एल. क्रोचर ने कहाँ है की, वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्वस्तर पर रुपान्तरण की प्रक्रिया है। वैश्वीकरण शब्द अंग्रेजी के ग्लोबलाइजेशन का हिन्दी रुपांतरण है। ग्लोबलाइजेशन के लिए हिन्दी में भूमंडलीकरण शब्द का प्रयोग किया जाता है। आज वैश्वीकरण के कारण विश्व मनुष्य आर्थिक सबलीकरण चाह रहा है। न कि सभी संस्कृतियों के मुल्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है और नही उसमें समरसता लानेका प्रयास वस्तुत: सभी महान संस्कृतियों के मूलभूत तत्व समान की है। वसुधैव कुटंबकम् न कि केवल भैतिक सुख ऐसी अनेकानेक चुनौतियाँ आज हमारे सामने डटकर खडी है। आज वैश्वीकरण के कुछ लाभ ही है। आज ज्ञान, विज्ञान, तकनी की चिकित्सा सूचना संचार आदि में अभूतपुर्व प्रगती का लाभ पूरा विश्व उठा रहा है।

भारत मे भूमंडलीकरण के छतरी के नीचे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का जो हमला आज हो रहा है । केवल हमारी अर्थव्यवस्था पर नही है। इसे समझना जरुरी है। यह हमला प्रगतीकामी जीवंत भारतीय संस्कृति एंरपरा जीवन शैली पर ही नाही बलकी वैचारिक संघर्ष से जैसे वैसे होते हुए लोक तांत्रिक मूल्यो पर भी है।

आज विश्वग्राम की कल्पना में बाजारवाद हावी होता जा रहा है। और लोंगो की इच्छा तथा शक्ति तथा मनोकामनाओं को शरीरिक सुख सुविधा और मौज मस्ती के मार्ग पर चलाने के अनुकूल परिवेश की सृष्टि हो रही है। और ऐसी परिस्थितीयों में साहित्य की भूमिका बढ जाती है। साहित्यकारों के जवाबदेही, सम समाजिकता, सम्बदता आवश्यभावी हो जाती है। परिणाम स्वरुप सामाजिक अर्थिक सांस्कृतिक राजनितीक धार्मिक परिवर्तनों के प्रभाव और साहित्य का सक्रिय होना जरुरी है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि भारत में सन १९९० के बाद वैश्वीकरण की शुरुआत हुई है। जिसके केंद्र में बाजारवाद पूंजीवाद है। इस वैश्वीकरण ने हमारे समाज राजनिती शिक्षा धर्म अर्थव्यवस्था संस्कृति एवं समाज को काफी हद तक प्रभावित किया है। वैश्वीकरण ने हमारे सामने कुछ चुनैतियाँ खी की है तो कुछ लाभ भी पहुँचाए है इस लाभ और चुनौतियों को हमारे हिन्दी साहित्य ने बराबर चित्रित किया है।

हिन्दी साहित्य में नये नये लेखको के साथ लेखिकाए भी उभरकर सामने आयी है। जिन्होने हिन्दी साहित्य को बहुमुल्या योगदान दिया है। जिसमे प्रमुख है कृष्णा सोबती ममता का लिया, नासिरा शर्मा, मधुकांकरिया अलका सरावगी, प्रभखेतान, दिप्ती खंडेवाल चंद्रकांत, मन्नु भंडारी, उषा प्रियवंद, चित्रा मुदगल, मृणाल पाण्डेय, मदुला ग आदि लेखिका ओने वसुधैव कुटूम्बकम की उक्ति के समान ही आज पुरा

109

विश्वा विश्वग्राम बन गया है। विश्व में घटने वाली हर घटना वह कही भी घटीत क्यो न हो उसका असर विश्व पर दिखाई देता है। वैश्वीकरण के इस माहिलो में नई नई समस्याए आज समाज के सामने है । इन सभी महिला लेखिका औने उन सभी समस्योओं को वाणी देने का काम महिला लेखिका ओने किया है।

वैश्वीकरण के कारण आज नगर, महानगर, सामान्य जनता आकर्षण केंद्र बन गया है। वैश्वीकरण से प्रभावित हो कर इक्वीसवी सदी की महिला कथाकारोंने अनेकाअनेक पहलुओं को अपने कथा साहित्यय कें माध्यमसे हमारे सामने रखने का प्रयास किया है। वैश्वीकरण के कारण सहज रुप से साधनों की उपलब्धता ने हमारे अन्दर प्रादेशिकता आंतकवाद, विस्थापन भोगवृत्ती भैतिकलित्सा को भडकाया है। कम समय में वगैर परिक्रम किये बिना ज्यादा पाने की भावना को बढावा दिया है।

कथा सतीसर लेखिका चंन्द्रकांता व्दारा कश्मीर जन जीवन पर लिखित उपन्यास है भारत का स्वर्ग कही जानेवाली कश्मीर रुपी धरती लहुलुहान जिन्दगी जिने को बाध्य है उपन्यास में आम आदमी, सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक परिस्थितियों में जो बदलाव वैश्वीकरण के कारण आया है, वह दिखाने का प्रयास किया गया है। चन्द्रकांता जी की कहानियों नर वैश्वीकरण का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

संक्षेप में कृम कह सकते है कि विश्वीकरण के कारण निर्मित प्रभावित समाज जीवन को इक्कीसवी सदी कें महिला कथाकरोंने ईमानदारी के साथ व्यक्त किया है।

इक्कीसवी सदी के महिला कथाकासे के साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव दिखाई देता है। उनके विचरों भावों शैली में थी अन्तर दिखाई देनलगा है। उनके विचारों भावों शैली में थी अन्तर दिखाई देन लगा है। इन महिला कथाकारोंने अपने साहित्य के कथात को में अपने साहित्य के कथ्यान को में आंतकवाद विस्थापित हुए लोगे की समस्या बदलते नाते रिश्ते स्त्री की समस्या आदि विषयों पर अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है। महिला कथाकारों ने विषय के अनुरुप अपने कथान को का विस्तार किया है। जिस कारण कथानक का फलक अधिक बढ गया है। उपन्यास में हर पहलुओं पर विचार किया गया है। कथानक कों रोचक बनाने के लिए संदर्भो घटना प्रसंगो का प्रयोग किया गया है। जो कथ्यानक हो रोचक सजीव एवं प्रभावोत्पादक बनाने में सक्षम है।

देशकाल वातावरण यह कथा साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है। कथा को यथार्थ एवं जीवंत रुप प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण है। अत्यंत विश्वसनीय एवं स्वभाविक लगता है। जिसे पढकर ऐसा लगता है कि लेखिका ओंने देशकाल का चयन न करके चल चित्रों के भांति पान्को के सामने पेश किया है। सभी महिला कथा कारो में कथानक के अनुसार पत्रो का चयन कर उनके अनुसार भाषा का प्रयोग किया है। उर्दू, अंग्रेजी,

110

पंजाबी, कश्मीरी आदि भाषाओं के शब्द मिलते है। उनके कथा साहित्य मे संवादात्मक पूर्वदिप्त आत्मकथात्मक वर्णनात्मक प्रतीकात्मक आदि शैलियों का प्रयोग हुआ है।

पात्रों का चयन करते समय शील, स्वभाव आहार व्यवहार उनकी संवेदना, स्मृती निर्णय शक्ति कल्पना आदि पर विशेष ध्यान दिया गया है। जो वैश्वीकरण के युग के लगते है। साथ ही कथान के अनुसार पत्रों का चयन किया गया है।

स्त्री अपने अधिकारों को पाने के लिए लड रही है। उसकी अनेक समस्याओं का निराकरण करने का लिए वैसे ही चरित्रों का निर्माण इन महिला कथाकारों ने किया है। यह चरित्र वैश्वीकरण से प्रभावित दिखाई देते है। प्रत्येक महिला लेखिकाओंने साहित्य का निर्माण करते समय विशिष्ट उद्देश्य सामने रखकर ही साहित्य का निर्माण किया है। जीवन में उद्देश्यक का होना बहुत महत्वपूर्ण है। इन महिला कथा कारोंने नारी की पीडा दु:ख दर्द को देखा भोगा है। और उससे वाहर निकलने के लिए रास्ताभी खोज निकाला है। साथ ही समाज में चल रही मुप्रधाओं देश की समस्या रोजगार, बेकारी, आंतकवाद आदि समस्याओं का स्पष्ट चित्रण उन्हों ने अपने साहित्य में किया है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि वैश्वीकरण से प्रभावित होकर लेखन करनेवाली महिला कथाकारोने वैश्वीकरण से प्रभावित समाज किया है। यह करते समय समाज में आयी असंवेदनशील यांत्रिकता ने कथा सहित्य के कक्ष्य को प्रभावित किया है। २००० के बाद के महिला कथाकारोंने खुली दृष्टी से स्वीकार किया है।

विश्वमहिला सशक्तिकरण के नारे को जनजन तक पहुंचाया है। शिल्प की दृष्टी सें भी वैश्वीकरण का प्रभाव कथानक के रचना से लेकर संवाद योजना देशकाल वातावरण भाषा और उदेश्य तक दिखाई देता है। आज महिला कथा साहित्य भाव, विचार भाषा शैली और उद्देश्य सभी दृष्टियों से वैश्वीकरण से प्रभावित है। महिला कथा साहित्य दया क्षमा परोपकार त्याग समष्टि विचार संयुक्त परिवार इन्यानियत करुणा राष्ट्रप्रेम संस्कृति प्रेम बुजुर्गों का सन्मान मातृपितृ सेवा नैतिकता समता बंधुता स्वतंत्र्यता न्याय आदि मानवीय मुल्यो की शिक्षा देता है। सभी महिला कथाकारों ने अपने कथा साहित्य में केवल महिलाओं से सम्बधित समस्याओं को नही रेखाकित किया है। बहिल वेश्वीकरण से प्रभावित भारतीय समाज की अनेकाने समस्याओं को रेखाकित किया है। जिसमें स्त्री, युवा, बुढे सभी का समावेश है। इन महिला कथाकारों ने उच्च मध्यवर्ग और निम्नवर्ग की समस्याओं को अपने कथा सहित्य मे स्थान दिया इन्होने स्त्रीयो के साथ साथ दलितों

"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 05, Issue: 04, Jul. – Aug. 2018 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) - 4.935

आदिवासियो पिछडों को भी अपने कथा साहित्य में स्थान दिया संक्षेप- में हम कह सकते है, की संभवतः महिला कथा कैसे वैश्वीकरण के इस युग के भारतीय समाज को समग्रता के साथ चित्रीत किया है।

निष्कर्ष :-

आज के दौर में संस्कृति का भी बाजार गर्म हुआ है। महिला कथा साहित्य में चित्रीत इक्कीसवी सदी में नारी की सामाजिक स्थिती यह है। कि वह अपनी चाहतों इच्छाओं के अनुरुप जी भी नही पा रही है।

माहिला लेखिकाओंने हिन्दी साहित्य में चित्रीत नारी जीवन के विविध पहलुओ को उजागर किया है। इन लेखिका ओंने हिन्दी साहित्यमें नारिय के सामाजिक दायित्व का निर्वाह लेखिका औने किया है। सभी महिला लेखिका ओंने अपनी रचना ओं में घटित घटनाओं के संदर्भ प्रस्तुत करके समाज जीवन की पोल खोलने का प्रभावी काम किया है।

संदर्भ सूचि :-

१. राजकिशोर स्त्री परम्परा और आधुनिकता पृ १६७
२. मैत्रेयी पुष्पा विजन पृ
३. चन्द्रकांता कथा सतीसर पृ. ३९५
४. चित्रा मुद्गल बयान भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली सं. २००५
५. ममता कालिया दौड वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्र. स २०००
६. जया जादवानी तत्वमसि वाणी प्रकाश नई दिल्ली सं २००२.

112

2018-19

Impact Factor-6.261

ISSN-2348-714

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019

SPECIAL ISSUE-XXX

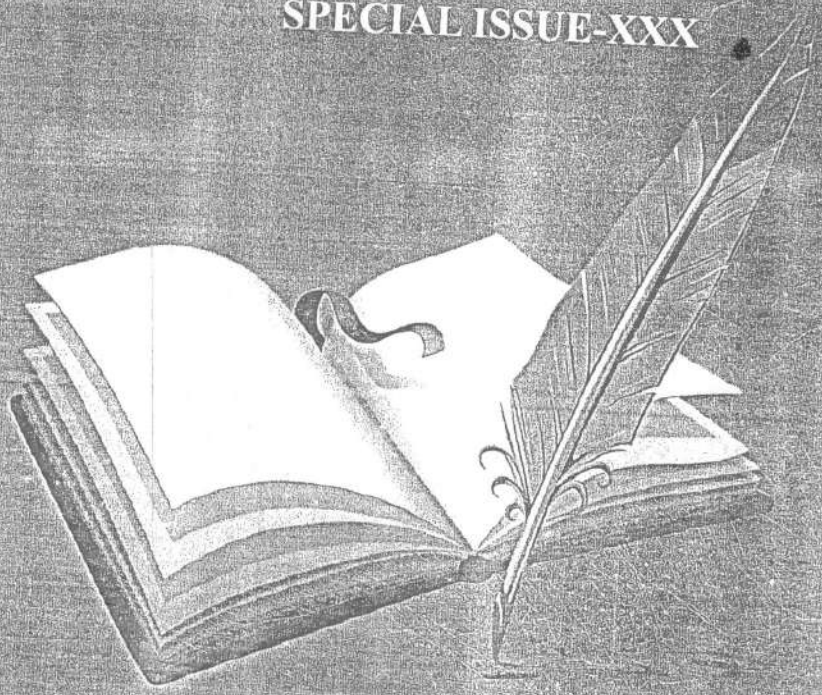

इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

Guest Editor

Dr.P.K.Koparde

Dr.V.V.Arya

Dr.Dhanraj T.Dhangar

Assist.Prof.(Marathi)

MGV'S Arts & Commerce College, Yeola,

Dist.Nashik (M.S.)

102

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue -1- इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर
ISSN : 2348-7143
February-2019

इक्कीसवीं सदी की कविता में स्त्री जीवन

डॉ.रेखा मुळे
हिंदी विभाग
वसंतदादा पाटील महाविद्यालय, पाटोदा

==========

इक्कीसवीं सदी की कविता को हम परिवर्तनवादी विचारों से प्रगल्भ होते हुए देख सकते हैं। इक्कीसवीं सदी के सभी कवियों ने अपने अधिकारों को अपनाकर परंपरावादी विचारों एवं सामाजिक बंधनों को नकारने की बात करता है। हिंदी कविता का इतिहास देखे तो उन्नीसवीं सदी के पूर्वाध्द को देखे तो हिंदी कविता एक विशिष्ट वर्गद्वारा एक विशिष्ट वर्ग के लिए लिखी जाती है। उन्नीसवीं सदी के मध्याह से लेकर इक्कीसवीं सदी के पूर्वार्ध्द तक हिंदी कविता फुले शाहु आंबेडकरवादी कविता ही बन गयी। कविता के केंद्र में दलित आदिवासी स्त्री तथा अल्पसंख्याक समाज आ गया।

इक्कीसवीं सदी में स्त्री न घर में सुरक्षित है न बाहर, वह दो पाटों के बीच पीसी जा रही है। उसकी इस पीडा, दुख, दर्द और शोषण को इककीसवीं सदी की हिंदी कविता ने वाणी दी है। इक्कीसवीं सदी की स्त्री स्वतंत्र तो दिखाई देती है, पर उसे आज भी अपना भविष्य चुनने का अधिकार नहीं है। आज भी वह अत्याचारित है। उसके शोषण के अलग–अलग रुप है, कभी उसका परिवार में ही शारीरिक लैंगिक तथा मानसिक शोषण किया जाता है।

स्त्री प्रकृति की सबसे संवेदनशील है, उसक मन भावना उसकी दुनिया में जाकर उसे ढुंढने का संवेदनशील प्रयास इक्कीसवीं सदी की कविता कर रही है। स्त्री भ्रूणहत्या ने जो स्त्री को खोखला बना दिया है। इक्कीसवीं सदी की कविताएं स्त्रीमन की पीडा को दर्शाती है।

साहित्य का आरंभ कविता से हुआ है। कविता की परंपरा हजार बारह सौ वर्षों की है। प्राचीन युग से लेकर इक्कीसवीं सदी तक इस कविता ने अनेक मोड़ लिये। अनेक समस्याओं का सामना किया। मुक्तिबोध ठीक ही कहते थे की कविता कभी खत्म नहीं होती। कविता शब्द से ही समष्टि का बोध होता है। कविता मानव मन को अचेतन से उठाकर सर्वोच्च सर्वांग चेतन एवं सुंदर बनाने का काम करती है।

इक्कीसवीं सदी की कविता विविध विमर्शों का निर्वाह कर रही है। हिंदी कविता का इतिहास देखे तो उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध्द तक हिंदी कविता एक विशिष्ट वर्ग द्वारा एक विशिष्ट वर्ग के लिए ही लिखी जाती थी। इक्कीसवीं सदी कविता चिंता की भी कविता है और चिंतन की भी है। कविता तो जन गण मन के लिए होती है।

कविता मात्र मनोरंजन नहीं होती। कविता आकार से तो छोटी होती है पर वह गागर में सागर भरने का काम करती है, केवल कविता के लिए कविता नहीं लिखी जाती। कविता के माध्यम से समाज का यथार्थ समाने रखा जाता है। वर्तमान कविता विशाल से विशाल तथा व्यापक से व्यापक वैश्विक अनुभव की अभिव्यक्ति करती है। 21 वीं सदी कविता यह बताती है की सच्ची कविता हमेशा आम आदमी की बात करती रहेगी कविता सूक्ष्म सौंदर्य को प्रगट करती है।

21 वीं शती के हिंदी साहित्य में परिवर्तनवादी विचारों की अधिक प्रगल्भता व्यक्त होते हुए देख सकते हैं। आजादी के साठ साल बाद भी समाज 21 वीं सदी की कविता में आंबेडकरवाद दिखाई देता है। मनुष्य को मनुष्य बनाना आंबेडकरवाद है, यह प्रज्ञा, शील, करुणा का संदेश देता है। 21 वीं सदी की आंबेडकरवादी हिंदी कविता पर आंबेडकरवाद का स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है। बुध्द ने अंधश्रध्दा, जातीयता, ईश्वर, आत्मा, परमात्मा, हिंसा इन सभी को नकारा था।

दलित कविता न जाति विहीन समाज का बल्कि वर्ग विहीन समाज का भी समर्थन करती है। दलित कविता में वर्ग व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश और विद्रोह।

सभी दलित कवि ज्योतिबा फुले को अपना विचारक मानते हुए डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को अपना शक्ति पुंज स्वीकार करते हैं। कवियों की असली पहचान वे केवल कविता के लिए नहीं लिखते कविता के माध्यम से समाज का यथार्थ सामने हैं।

कविता में भावुकता के साथ दलित जीवन का चित्रण हो रहा है। हिंदी दलित कविता ने जाति वर्ग व्यवस्था आदि की सीमाएं तोड़कर दलितों की विद्रोहात्मक अभिव्यक्ति की वाणी प्रदान की है।

103

दलित साहित्य और कविताएं मनोरंजन और आनंद के लिए नहीं है, बल्कि हिंदु सभ्यता एवं संस्कृति से मिली यातना अत्याचार और वेदना को परिर्वन कामी स्वर में बदलने की क्षमता उनमें है। कविताएं मनुष्य से मनुष्य के बीच एक समाज से दूसरे समाज के बीच की दूरियों को बांटने का काम करती है, क्योंकि उसका ध्येय समता कायम रखना है। दलित कविता हिंसा और घृणा से युक्त हिंदु व्यवस्था नकार कर समानता एवं करुणा पर आधारित व्यवस्था की मॉग करती है।

आचार्य शुक्ल ने 21 वीं हिंदी कविता में स्वच्छंदतावाद के उत्थान का विवरण किया है। हिंदी का छायावादी काव्य स्वच्छंदतावाद की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति है।

राष्ट्रीयता हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रत्येक काल में किसी न किसी रुप से कविता में अभिव्यंजित होती रही। राष्ट्रीय काव्यधारा का रुप में आरंभ द्विवेदी युग में हो जाता है। छायावाद के समांतर अपनी कविताओं को सीधे राष्ट्रीयता कांति देश प्रेम स्वच्छंदता समाज सुधार की भावना व्यक्त करते रहे। 21 वीं सदी की कविता चिंता की भी कविता है और रक्त के गुणसुत्र में आपको दिखाई देगा 21 वीं सदी की कविता चिंता की कविता और चिंतन की भी है। उसका साम्राज्यवाद और सांप्रदायिकता को भी विरोध है, मानवता के विरोधी कृत्यपर इस कविता का घटाटोप रहता है।

कवि अपनी कविता में जिस भाषा का प्रयोग करता है वह दोहरे अर्थ में महत्त्व रखती है, प्रथमतः वह कवि के मन में स्थित कथानक की वैचारिकता को व्यक्त करती है, जिसक लिए उसके पास यही एक माध्यम होता है इसके द्वारा ही वह उसे पाठको तक पहुंचाने में समर्थ होता है। इसके साथ ही वह अपनी कविता में वह भी पृथकता से युक्त होकर अपने हृदय की विविध अनुभूतियों और भावनाओं की प्रतीति दूसरो की संक्षेप बिना भाषागत सफलता के कविता की सफलता असंभव लगती है।

21 वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य में वैश्विकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरुव शीघ्रता से निर्माण हुये मनुष्य और उसकी जीवनानुभूति ने साहित्य एवं साहित्यकारों को अपनी और आकर्षित कर सोचने के लिए बाहय किया। प्राचीनकाल से साहित्य में कविता में अत्यन्त साधारन महत्त्व रहा है। कतिपय विद्वानों ने कविता को मनुष्य के सर्वोत्कृष्ट भावों का सर्वोत्तम भाषा में प्रकाशन मानते हुये उसे संसार की सब कलाओं और विभूतियों का अधिराज माना है। उनकी दृष्टि में कविता के समान कोई दूसरी निधि नहीं है, काव्य रचना में सृजनकर्ता एक और कोई दृश्य वस्तु या विचार की अनुभूति कल्पना के विविध रंगो में शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है और इसी के आधार पर किसी भी काव्य कृती का एक अत्यन्त स्थूल विभाजन कर लिया जाता है। कविता मूलतः युग सन्दर्भो की देन होती है, उसमें अतीत चित्रण और भविष्य संकेत भी युग सन्दर्भ से जुड़कर ही आते हैं।

सृजनात्मकता एक सार्थक व्यवस्था है जिसके माध्यम से रचनाकार की संवेदना अनुभूति तथा भाव विचार यह साहित्यिक स्वरुप को ग्रहण करते हैं, किसी भी रचना का स्वरुप निर्मित करने में कथ्य तथा रुप का विशिष्ट योग रहता है। अतः इन दोनों गृहीत सारगर्भित विचारोत्तेजक कथ्य की संरचना के लिए भाषा का तदनुरुप, भावोत्तेजक प्रवाहपूर्ण होता महत्वपूर्ण होता है। इसीलिए रचनाकार अपनी रचनाओं में जिस सृष्टि की स्थापना करना चाहता है। उसके लिए अनुकूल तथा सारगर्भित भाषा को अपनाता है। इस भाषा की तलाश में कवि जिस सीमा तक सफल हो जाता है। उसकी कविता भी उतनी ही सार्थक एवं महत्त्वपूर्ण रुप में स्वीकार की जाती है।

निष्कर्षतः भाषा कवि की प्रतिगामीनी न होकर उसकी अनुगामिनी बनती है। इसलिए कविता की सार्थकता को ध्यान में रखनेवाला कवि भाषा में निहित शब्दों में प्रसंगानूकुल चयन के प्रति जागरुक रहता है। कवि अपनी प्रतिभा से अप्रचलित शब्दों तथा लोकभाषा के सरल सहज शब्दों को काव्य में प्रयोग कर नयी अर्थवत्ता को प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1.धूमिल की काव्यकला – डॉ.सुधाकर शेंडगे
2.कल सुनना मुझे–धूमिल
3.डॉ.जनेश्वर शर्मा – हिंदी कविता में मार्क्सवादी चेतना
4.कविता के नये प्रतिमान – डॉ.नामवरसिंह
5.नया काव्य नये मूल्य – ललिता शुक्ल
6.आधुनिक हिंदी कविता – नागेश्वर लाल